

बृहत्रयी में नारी शिक्षा : एक विमर्श



अंकिता सिंह
शोधच्छात्रा,
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सृष्टि के आदि काल से ही नारी की महनीयता का वर्णन मिलता है, वह प्रारम्भ से ही पुरुष की अद्वाडिगनी, माता, पुत्री, बहन आदि अनेक रूपों में मानव जाति की पूज्या रही है। वैदिक साहित्य में अपाला, घोषा, लोपा, गार्गी आदि नारियों का उल्लेख है। पौराणिक युग में सीता, सावित्री, द्रौपदी, अनुसूया, दमयन्ती आदि नारियों का सादर उल्लेख हुआ है। आदि शक्ति माँ दुर्गा की उपासना आज भी सम्पूर्ण भारत भूमि में अत्यन्त सादर भाव से की जाती है। अद्वनारीश्वर शिव को शक्ति प्रदान करने वाली आदि शक्ति जगज्जननी पार्वती को कौन नहीं जानता।

नारी का संस्कृत साहित्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। बृहत्रयी में नारी को विविध रूपों में मान्यता प्रदान है। बृहत्रयी में नारी शिक्षा का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। जीवन के सर्वांगीण विकास का माध्यम निस्संदेह शिक्षा ही है। प्राचीन भारतीय संस्कृति की ओर देखने पर हमें नारी की शैक्षिक स्थिति संतोषजनक प्राप्त होती है, किन्तु जैसे-जैसे नारी के धार्मिक अधिकारों का ह्वास होने लगा उसके परिणाम स्वरूप नारी शिक्षा का ह्वास होने लगा। डॉ० अल्टेकर के अनुसार नारी की शिक्षा का ह्वास का कारण बालिकाओं की विवाह की अवस्था का कम होना था, किन्तु बृहत्रयात्मक काल में ऐसा कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता। उस काल में कन्यायें विवाह के समय युवावस्था को प्राप्त थीं और अपने जीवनसाथी के चुनाव में उन्हें सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। इसका अर्थ यह है कि उस समय की कन्या शिक्षित थी, समझदार थी और उन्हें व्यवहारिक ज्ञान भी था, इसीलिए तो कन्या को अपने जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतन्त्रता थी। परन्तु इतना अवश्य था कि स्वयंवर में निमन्त्रित राजकुमार अथवा राजा कन्या के पिता द्वारा

ही बुलाये जाते थे और माता-पिता को कन्या द्वारा चुने गये वर के प्रति किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं होती थी।¹ नारी शिक्षा के बारे में केवल साहित्यिक प्रमाण ही प्राप्त नहीं होते, अपितु मूर्तिकाल द्वारा भी नारी के शिक्षित होने के प्रमाण मिलते हैं।

स्त्रियों की विद्या प्राप्त करने का अधिकार प्राचीन काल से ही रहा है। भले ही विदुषी नारियों की संख्या कम रही हो। वैदिक कालीन नारियाँ शिक्षित थीं इसका पता इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि प्राचीन काल में मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के समान बहुत सारी मन्त्रदृष्टी नारियाँ, अदिति², अपाला³, लोपामुद्रा⁴ आदि भी हुई हैं, जिन्होंने ऋग्वैदिक मंत्रों की रचना की। वैदिक युग में वेद पढ़ने का स्त्री को समान अधिकार था। वेद के अध्ययन हेतु यज्ञोपवीत के अधिकार से भी नारी वंचित नहीं थी। उपनिषद् काल में भी कई दार्शनिक नारियों की विद्वत्ता का परिचय मिलता है। याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को सर्वोच्च ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी। राजकुल की दासियाँ तक चौसठ विद्याओं में विशारद तथा नृत्य, वाद्य और संगीत में कुशल होती थीं।

चतुः षष्ठि विशारदाः ॥⁵

तो क्या उच्च अथवा मध्यम वर्गीय कन्यायें शिक्षा से दूर रह सकती हैं। भारतीय काव्य साहित्य में सरस्वती और पार्वती को विद्या की अधिष्ठात्री देवी के रूप में माना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नारियों को विद्या प्राप्त करने के मार्ग में कोई धार्मिक रुकावट नहीं थी।

नारी शिक्षा के विषय :

कन्याओं को दी जाने वाली शिक्षा के विषय में हमें अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। उपनिषद्‌कालीन अध्ययन करने वाली नारियों को 'उपाध्याया' की उपाधि से सम्मानित किया गया है, इससे यह पता चलता है कि आचार्यों द्वारा अवश्य ही किसी स्थान विशेष पर बालिकाओं को शिक्षा दी जाती रही होगी परन्तु उसका कोई लिखित प्रमाण हमें नहीं प्राप्त होता है। चतुर्थ शताब्दी के रचनाकार हारीत के वर्णन "तत्र ब्रह्मवादिनी नामग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे च भैक्षचर्येति"⁶ से पता चलता है कि कन्याओं को गृह में ही किसी सम्बन्धित पुरुष से शिक्षा लेनी चाहिए। इससे यह भी ज्ञात होता है कि कन्याओं को शिक्षा दी जाती थी चाहे घर के भीतर या बाहर। नारियों को दी जाने वाली शिक्षा का विषय क्या रहा होगा इसके बारें में उपलब्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सामग्री के आधार पर कह सकते हैं कि कन्या को सर्वप्रथम गृह-विज्ञान की

शिक्षा एवं व्यावसायिक ज्ञान की शिक्षा तो प्रत्येग वर्ग को दी जाती रही होगी। परन्तु इसके अतिरिक्त योग्यता और कुल के आधार पर कन्याओं को धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, व्यावसायिक सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी।

व्यावहारिक शिक्षा :

व्यावहारिक शिक्षा के अन्तर्गत गृह-विज्ञान का विशेष महत्व था और प्रत्येक नारी से गृहकार्यों के सम्पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा की जाती थी, चाहे वह राजपरिवार की हो या मध्यम वर्ग की। जैसे— प्रसाधन तैयार करना, पुष्पों की मालायें बनाना, केश-सज्जा आदि का कार्य धनिक परिवारों में दासियाँ किया करती थी क्योंकि दासियाँ न केवल एक बल्कि चौसठ कलाओं में पारंगत थी। किन्तु आपत्ति के काल में राजघरानों की भी स्त्रियाँ इन सभी कार्यों को करती थी। महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार ‘द्रौपदी का सरन्धी के रूप में उत्तरा की माता की केश संरचना करना।’ इससे स्पष्ट होता है कि राजघरानों में दासियाँ भले ही होती थी किन्तु महिलायें भी गृहकार्य में दक्ष होती थीं। बृहत्रयी में स्त्रियों को ललित कला की शिक्षा का भी वर्णन मिलता है। इन कलाओं में नृत्य, संगीत, वाद्य, काव्य, चित्रकला आदि का विशेष महत्व था। उच्च कुलों में इस शिक्षा पर अधिक महत्व दिया जाता था। नैषधीयचरितम् के षष्ठ सर्ग⁷ में गन्धर्वस्त्रियों को नारद की शिष्यायें बताया गया है, जो कि संगीत विद्या में प्रवीण थीं किन्तु वे दैवी पात्र हैं, फिर भी इससे यह सिद्ध होता है कि स्त्रियाँ ललित कला में प्रवीण थी क्योंकि यदि दैवी पात्रों की शिक्षा का उल्लेख है, तो लौकिक पात्रों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने के विषय में सन्देह नहीं किया जा सकता।

धार्मिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा :

बृहत्रयी में स्त्रियों को व्यवहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। किरातार्जुनीयम् की मुख्य नायिका द्रौपदी राजनैतिक ज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान से अनभिज्ञ नहीं थी।⁸ अध्यात्म के प्रति भी इनका लगाव था।

इमामहं वेद न तावकीं धियं विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः।

विचिन्त्यन्त्यां भवदापदं परां रूजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः।।

नैषध में भी धार्मिक कार्यों के प्रति उनकी अभिरुचि पायी जाती है। वे देव-पूजा करती थीं। धार्मिक शिक्षा स्त्रियों को केवल महाकाव्यों में नहीं दी जाती थी, अपितु इससे पूर्व भी उपनिषद् काल में भी मैत्रेयी, सुलभा जैसी नारियाँ आध्यात्मिक शिक्षा अथवा धार्मिक शिक्षा में पारंगत थीं। यहाँ तक कि सृष्टि प्रारम्भिक युग ऋग्वैदिक काल में भी स्त्रियाँ प्रतिदिन यज्ञ करती थीं।⁹

राजनीतिक शिक्षा :

राज्य शासन में परामर्श और सहयोग के लिए नीतिशास्त्र का ज्ञान आवश्यक होता है। इसलिए राजकुमारियों एवं सामन्त कुमारियों की शिक्षा का प्रमुख अंग राजनैतिक शिक्षा थीं और वे उसमें रुचि भी लेती थीं। सृष्टि के प्रारम्भिक काल से ही स्त्रियाँ अपने पति के साथ प्रत्येक कार्य में सक्रिय भाग लेती रही हैं। फिर चाहे वह गृहस्थी का कार्य क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या रणक्षेत्र। जैसा कि सामाजिक जीवन में प्रवेश करते समय कन्या को वधू के रूप में ‘साम्रज्जी भव’¹⁰ का आशीर्वाद दिया जाता है, जो कि यह प्रमाणित करता है कि प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ‘गृह’ की वे स्वामिनी होती थी और गृह को समाजशास्त्र के विद्वान नागरिक प्रथम पाठशाला के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अतः पाठशाला रूपी गृह की गुरु रूपी स्वामिनी अवश्य ही शिक्षित रहीं होगी। भले ही शैक्षणिक योग्यता उसके पास कम हो लेकिन व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा में कमी न थी। वैदिक परम्परा का अनुकरण करता हुआ नारी-समाज आज भी राजनैतिक क्षेत्र में किसी भी तरह पीछे नहीं है। बृहत्रयात्मक काल में भी नारियों को राजनैतिक शिक्षा दी जाती थीं। किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में ग्रन्थकार ने द्रौपदी के मुख से राजनैतिक ज्ञान से परिपूर्ण वाक्यों को प्रस्तुत किया है।¹¹

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भविन्त मायाविषु येन मायिनः ।

प्रविश्य हि धन्ति शठास्तथा विधानासंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥

न समयपरिरक्षणं क्षमं ते निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः ।

अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि ॥

जिससे प्रमाणित होता है कि द्रौपदी को राजनैतिक शिक्षा का ज्ञान भली-भाँति प्राप्त था। द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को समझाना, उसकी व्यावहारिक बुद्धिमता को दर्शाता है। उसकी

पाण्डित्यपूर्ण एवं गूढ़ राजनीति की बातों से भीम भी सहमत है। भीम का तो यहाँ तक कहना है कि द्रौपदी की बातें तो बृहस्पति के लिए भी विस्मय का कारण हैं अर्थात् अकाट्य है।¹²

यदवोचत वीक्ष्यमानिनी परितः स्नेहमयेन चक्षुषा ।

अपि वागधिपस्य दुर्वचं वचनं तद्विदधीत विस्मयम् ॥

अतः नारी का पुरुष को राज्यकार्य में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग उसकी राजनैतिक शिक्षा ग्रहण किये जाने का प्रतीक है।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि बृहत्रयात्मक काल में या उससे पूर्व स्त्री जाति को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार था, किन्तु स्त्रियों के लिए गुरुकुलों की व्यवस्था नहीं थीं अपितु उन्हें घर में ही किसी सम्बन्धित पुरुष द्वारा शिक्षा दी जाती थी।

जैसे उत्तरा (महाभारत की स्त्री पात्र) को नृत्य सीखने के लिए जब शिक्षिका (बृहण्णला) का चुनाव किया गया तो उसकी पहले परीक्षा ली गयी थी। इससे सिद्ध होता है कि कन्या की शिक्षा पर विशेष ध्यान रखा जाता था। नैषधीयचरितम् में नल का दमयन्ती के सौन्दर्य, वैदुष्य आदि गुणों के कारण उसकी ओर आकर्षित होना¹³ भी उपर्युक्त कथन का ही समर्थन करता है। किरात में तो एक कुशल मार्गदर्शक की भाँति द्रौपदी द्वारा अर्जुन को उपदिष्ट किया गया है।¹⁴ स्त्रियों का आचरण, उनके द्वारा यज्ञानुष्ठान, वर चयन के समय वर की योग्यता का निरीक्षण कर वरमाला डालना, विभिन्न पुरुष पात्रों के साथ वैदुष्यपूर्ण संवाद आदि बातों से सिद्ध होता है तत्कालीन समाज में नारी निश्चित ही सुशिक्षित रही होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. नल—दमयन्ती स्वयंवर, नैषधीयचरितम्
2. अदिति महर्षि कश्यप की पत्नी तथा देवताओं की माता। – ऋग्वेद 10.72.9
3. अपाला महर्षि अत्रि की पुत्री, जिसका नाम ब्रह्मवादिनी के नाम से प्रसिद्ध है। – ऋग्वेद 8.91.7
4. लोपामुद्रा, राजा विदर्भ की इकलौती पुत्री जिसका विवाह महर्षि अगस्त्य से हुआ था। – ऋग्वेद 1.179.4

5. महाभारत, 2.61.9
6. स्मृति चन्द्रिका संस्कार खण्ड में उद्धृत।
7. भैमीमुपावीणदेत्य यत्रकलिप्रियस्य प्रियशिष्यवर्गः ।
गन्धर्ववधः स्वरमध्वरीणतत्कण्ठनालैक धुरीणवीणः ॥ – नैषधीयचरितम् षष्ठ सर्ग
8. किरातार्जुनीयम्, 1.37
9. ऋग्वेद, 5.28.1
10. ऋग्वेद, 10.85.46
11. किरातार्जुनीयम्, 1 / 30, 45
12. किरातार्जुनीयम्, 2 / 2
13. अलं विलम्ब्य, त्वरितुं हि वेला, कार्ये किल स्थैर्यसहे विचारः ।
गुरुपदेशं प्रतिभेव तीक्ष्णां प्रतीक्षते जातु न कालमर्तिः ॥ – नैषधीयचरितम् 3 / 91
14. मग्नां द्विषच्छदमानि पञ्चभूते सम्भावनां भूतिमिवोद्धरिष्यन् ।
आधिद्विषामा तपसां प्रसिद्धेरस्मद्विना मा भृशमुन्मनीभूः ॥ – किरातार्जुनीयम्– 3 / 39